आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2417 • उदयपुर, शुक्रवार 06 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

एक वक्त के भोजन को भी मोहताज सारा परिवार, दुःखी रामदास को मिली मदद

मानवता को झकझोर देने वाली दर्द भरी दास्तां है गुप्तेश्वर के पास बिलिया गांव में रहने वाले रामदास वैष्णव की। रामदास वैष्णव कारीगर है, जो अन्य श्रमिकों की तरह रोज कमाते और खाते हैं। कोरोना में उनका काम बंद था। परिवार के 6 सदस्यों के सामने भूख को शान्त करना मुश्किल हो गया उन्होंने नारायण सेवा संस्थान से मदद की गुहार लगाई।

संस्थान ने उनकी मदद करते हुए एक माह का राशन प्रदान किया। रामदास राशन पाकर संतुष्ट हुए ओर ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उनकी आँखों से खुशी के आँसू छलक पड़े। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि ऐसे ही 12 अन्य गरीब मजदूर परिवारों को भी निदेशक वंदना जी अग्रवाल की टीम ने राहत पहुचायी।

हादसे में घायल को कृत्रिम पैर लगाया

नरेश बस की प्रतीक्षा में अपने गांव पुर की सड़क के किनारे खड़ा था कि सामने से तेज रफ्तार में आते हुए ट्रक ने उसे चपेट में ले लिया, जिससे दायां पांव बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। अस्पताल में घुटनों तक पाँव काटने के अलावा डॉक्टर्स के पास अन्य कोई विकल्प भी नहीं था। नरेश ने बताया कि वह गरीब परिवार का बी.ए. का छात्र है।

कृत्रिम पांव लगवाना भी उसके सामर्थ्य से बाहर था। कुछ ही माह पूर्व उसे नेट पर नारायण सेवा के बारे में जानकारी मिली, और यहां आने पर भीलवाड़ा जिले के तसोरिया गांव के नरेश खटीक (23) को नारायण सेवा संस्थान में कृत्रिम मोड्यूलर पैर निःशुल्क लगाया।

नरवाना (हरियाणा) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगों की सेवार्थ देश–विदेश में निःशुल्क शिविर लगाकर उन्हें राहत पहुंचाने का क्रम जारी है।

इसी क्रम में 25 जुलाई 2021 को मिलन पैलेस नरवाना, जिला– जींद (हरियाणा) में विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया।

नारायण सेवा संस्थान की नरवाना शाखा द्वारा आयोजित इस शिविर मे 37 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाये गये व 25 को कैलीपर्स प्रदान किये गये। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि मंहत श्री अजयगिरि जी महाराज, अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग– (पूर्व अध्यक्ष नगर परिषद्), विशिष्ट अतिथि डॉ. जयसिंह जी गर्ग (समाजसेवी), श्री राजेन्द्र जी गर्ग (स्थानीय शिविर प्रभारी), श्री प्रवीण जी मित्तल एवं श्री राकेश शर्मा (समाजसेवी) पधारे।

टेक्नीशियन श्री भंवर सिंह जी एवं श्री नरेश जी वैष्णव ने श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी),श्री भरत जी (सहायक), श्री मुन्ना जी (कैमरामेन) श्री रामसिंह जी (आश्रम साधक) आदि की टीम के साथ सेवाएं प्रदान की।

कैथल (हरियाणा) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना से प्रभावित परिवारों तथा जरूरतमंदों को लॉकडाउन व अनलॉक काल में राशन वितरण की सेवा प्रारंभ की है। देशभर के 50000 परिवारों को इसका लाभ दिया जा रहा है।

इस शृंखला में संस्थान की कैथल शाखा द्वारा 26 जुलाई को राशन वितरण शिविर लगाकर 38 परिवारों को राशन किट प्रदान किये। प्रत्येक किट में आटा, दाल, चावल, घी, तेल नमक लाल मिर्चि पाउडर, धनिया, शक्कर आदि सामग्री समाहित है।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान विकास जी शर्मा, अध्यक्ष श्रीमान सतपाल जी गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्री रामकरण जी, श्री मदनलाल जी मित्तल, श्री सतपाल जी मंगला शाखा संयोजक, श्री दुर्गाप्रसाद जी, श्री सोनू जी बंसल, श्री जितेन्द्र जी बंसल। शिविर टीम लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), रामसिंह जी सहायक।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में निहित है दिव्यांगजनों की प्रगति की कुंजी

— प्रशान्त अग्रवाल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डेटा साइंस का एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने हाल के वर्षों में सभी कारोबारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक डेटा साइंस फंक्शन है जो कंप्यूटर को अनुभवों के माध्यम से सीखने और अपने स्वयं के स्तर पर ऐसे कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है, जिन्हें कुछ इनपुट्स के साथ बेहतर तरीके से किया जा सकता है। ग्राहकों से संपर्क में सहायता के लिए उपयोग किए जाने वाले चौटबॉट्स से लेकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक एक लंबा सफर तय किया गया है और कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है, जिसने पूरी दुनिया में कारोबार करने के तौर–तरीकों को बदल दिया है और इसीलिए आज पारस्परिक संपर्क के लिए दुनियाभर के व्यवसायों और सेवाओं में इसका इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल एआई एक उपकरण है जो एआई पेशेवरों द्वारा फीड किए गए डेटा के माध्यम से विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डेटा पैटर्न को पहचानता है। हाल के दिनों में जहां नई टैक्नोलॉजी बहुत कम समय में उन्नत हो रही हैं, वहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणा का उपयोग विभिन्न कॉरपोरेट्स द्वारा ऐसी सहायक तकनीकों के निर्माण के लिए किया गया है, जो कि दिव्यांग जनों के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं। एआई को अपनाने से अर्थव्यवस्थाओं में सीधे तौर पर व्यापक परिवर्तन नजर आ रहा है, साथ ही क्षमताओं का निर्माण करने के लिए भी एआई का उपयोग किया गया है। गार्टनर द्वारा हाल ही में जारी किए गए अध्ययन के अनुसार यह भविष्यवाणी की गई है कि वर्तमान में प्रबंधकों द्वारा किया जा रहा 69 प्रतिशत कार्य 2024 तक पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगा। भारत सरकार को भी समावेशी विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में भरपूर संभावनाएं नजर आ रही हैं। यही कारण है कि सरकार ने एआई पर एक टास्क फोर्स की स्थापना की है और नीति आयोग को निर्देश दिए हैं कि वह एआई को लेकर एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार करे। देश अपनी 4.0 औद्योगिक क्रांति में अपने एआई समाधानों के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करना चाहता है जो अतिरिक्त लागत लाभ के साथ उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। इस तरह व्यवसायों को श्रम की तुलना में थोड़ा अधिक लागत उत्पादक और लाभदायक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस प्रकार हमारा देश क्षमताओं का निर्माण करके डिजिटल दुनिया में व्याप्त वैश्विक विभाजन को कम करने की पूरी कोशिश कर रहा है।

नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक हालिया लेख के अनुसार भारत का शिक्षा जगत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। लेख में कहा गया है कि वर्ष 2030 तक दुनिया में सबसे अधिक युवा लोग हमारे देश में होंगे। इस दौर में एआई का उपयोग दिव्यांग लोगों के लिए भी फायदेमंद साबित हुआ है, क्योंकि अधिक से अधिक संगठन एआई को अपना रहे हैं और वे दिव्यांग लोगों को भर्ती करने के लिए तत्पर हैं, जो उन्हें परिवर्तनों के लिए अधिक अनुकूल बनाते हैं। एक तरह से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देता रहा है। गार्टनर की रिपोर्ट बताती है कि संगठनों से जुड़े 75 प्रतिशत प्रमुखों को कुशल प्रतिभा की कमी का सामना करना पड़ रहा है। चूंकि प्रतिभाशाली दिव्यांग जनों की प्रतिभा का अभी पूरी तरह इस्तेमाल नहीं हो पाया है, ऐसे में अधिकांश संगठन अब एआई के साथ खुद को लैस कर रहे हैं ताकि इन दिव्यांग उम्मीदवारों को स्किलिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें और भी अधिक सक्षम बनाया जा सके और उनकी प्रतिभा का उपयोग हो सके। इस तरह कार्यस्थल में भी विविधता नजर आने लगी है, जहां अब बड़े संगठनों द्वारा भी दिव्यांग जनों को स्वीकार किया जाने लगा है।

गार्टनर की रिपोर्ट में आगे विस्तार से बताया गया है कि 2023 तक नौकरी करने वाले दिव्यांग जनों की संख्या आज की तुलना में तीन गुना हो जाएगी, क्योंकि एआई की सहायता से कार्यस्थल की बाधाओं को कम किया जा सकेगा। गार्टनर का अनुमान है कि दिव्यांग लोगों को सक्रिय रूप से नियुक्त करने वाले संगठनों में कर्मचारियों के कायम रहने की दर 89 प्रतिशत रही है और इसके साथ ही कर्मचारी उत्पादकता में 72 प्रतिशत और संगठन की लाभप्रदता में 29 फीसदी की वृद्धि हुई है। एआई ने दिव्यांग जनों के लिए कई विकल्प खोले हैं, जिससे उनके लिए कार्यस्थल में अधिक समावेशिता को जोड़ा जा सका है। दिव्यांग लोगों के लिए हाल के दौर में सामने आए कुछ और दिलचस्प विकल्पों में एक विकल्प है रेस्तरां का कारोबार, जहां वर्चुअल रियलिटी और ब्रेल को लागू करते हुए दिव्यांगों के लिए नए अवसरों का सृजन किया गया है। कई संगठनों ने अपने यहां सक्रिय रूप से एआई रोबोटिक्स टैक्नोलॉजी को लागू किया है, जिसमें दिव्यांग जनों द्वारा रोबोटिक्स को नियंत्रित किया जाता है और वे ही उसका रख–रखाव भी करते हैं।

इधर जबकि एआई के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए नए विकल्पों को विकसित किया जा रहा है, दूसरी तरफ एक्सेंचर की 'रीवायर फॉर ग्रोथ' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से वर्ष 2035 तक देश की अर्थव्यवस्था में लगभग 957 बिलियन डॉलर जोड़ने की क्षमता है। समग्र रूप में एआई में वह क्षमता है जो मशीन लर्निंग के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चरल ग्रोथ के माध्यम से अनेक कारोबारों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में भी फायदेमंद साबित होगी। यह टैक्नीक स्क्रीनडायबेटिक रेटिनोपैथी (डीआर) और रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी (आरओपी) के लिए भी फायदेमंद होगी।

एआई ने कैरियर के अनेक ऐसे नए विकल्पों को खोलने में भी मदद की है, जहां सहायक तकनीक जैसे रीयल टाइम टैक्स्ट टू स्पीच और टैक्स्ट ट्रांसलेशन सिस्टम का उपयोग शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग क्षेषीय भाषाओं में मूल रूप से सूचना का प्रसार करने के लिए किया गया है जो वास्तव में दिव्यांग जनों के कौशल के लिए बनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राट के अनुरूप है। एआई तकनीक में एक और विकास बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन से संबंधित है, जिसका उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों की उपस्थिति को दर्ज करने के लिए किया जाता है। इस तरह यह तकनीक कर्मचारियों की उपस्थिति और अन्य प्रशासनिक कार्यों को रिकॉर्ड करने के लिए फायदेमंद साबित हुई है। बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस शिक्षकों और युवाओं दोनों की उपस्थिति के अनुपात को चिह्नित करने के लिए भी फायदेमंद साबित हुई है और इस तकनीक के माध्यम से उच्च शिक्षा के लिए पुरुष–महिला नामांकन के अनुपात की सटीक जानकारी मिल सकती है। छात्रों की शंकाओं और उनके सवालों के जवाब देने के लिए चौटबॉट्स का उपयोग किया जा रहा है, जिन्हें दरअसल विषय विशेषज्ञों ने तैयार किया है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का इस्तेमाल दीक्षा, ई–पाठशाला और स्वयंम (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) जैसे प्लेटफार्मों पर बड़े पैमाने पर आकलन के स्वचालित ग्रेडिंग के लिए किया जा सकता है। इसमें सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही नहीं, वर्णनात्मक सवालों को भी शामिल किया जा सकता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा क्षेत्र ने एआई के इस्तेमाल के साथ ही दिव्यांग जनों के लिए अनेक नए विकल्प खोल दिए हैं। इस राह में अनेक बाधाएं भी सामने आ सकती हैं, लेकिन निश्चित रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक सभी क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन करेगी, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में जहां दिव्यांग जनों के लिए यह तकनीक बेहत फायदेमंद साबित हो सकती है।

सम्पादकीय

स्वभाव का अर्थ है स्व–भाव यानी स्वयं में स्थित होना। स्वयं में स्थित होने का अर्थ है जो अपने अंतस् में व्याप्त है उसी के अनुसार आचरण या सोच होना। हरेक मनुष्य के विचार और आचार भिन्न–भिन्न हैं, इसीलिए स्वभाव भी एक–सा नहीं होता। स्वभाव तो सबका अलग–अलग ही रहेगा पर उसे सहज व सरल बनाकर हम एक जैसी मानसिकता तैयार कर सकते हैं। स्वभाव उलझा हुआ होगा तो आचरण भी वैसे ही होंगे, इसकी तुलना में स्वभाव यदि सरल है तो आचरण पक्ष भी सहज ही होगा। स्वभाव हमें विरासत में भी मिलता है और स्वयं भी निर्धारण करने की पूरी स्वतंत्रता है। जो विरासत में मिला स्वभाव है वह वातावरण व संगति का उत्पाद है। यह सही भी हो सकता है और गलत भी, क्योंकि इसमें गुणावगुण के हिसाब से ग्रहण किया हुआ नहीं है। पर जो स्वभाव हम अपने अनुभव, अपने अभ्यास या अपने निजीपन से विकसित करेंगे वह नितांत अच्छा ही होगा। यह अच्छा होने का एक कारण यह भी है कि व्यक्ति स्वयं में श्रेष्ठ होता है। तो क्यों न हम अपने स्वभाव को 'स्व–भाव' कह सकें।

कुछ काव्यमय

कहते हैं सुधरे नहीं,
जो पड़ जाय स्वभाव।
पर संकल्प सुधारते,
रिक्त न जाता दाँव।।
स्वभाव जितना सरल हो,
उतना ही है लाभ।
लोकप्रिय होता वही,
बढ़ती जाती आभ।।
सरल स्वभावी लोग ही,
है सबको स्वीकार।
उलझे – उलझे जो रहे,
वो खुद पर ही भार।।
जैसा चाहो बन सके,
अपना निजी स्वभाव।
सद्स्वभाव से भर सकें,
बड़े पुराने घाव।।
स्वभाव कैसा बन गया,
यह ना अंतिम बात।
परिवर्तन खुद हाथ है,
ज्यों चाहो बन जात।।

- वरदीचन्द राव

याद रखें
है सुरक्षा में सबकी भलाई
जो है जीवन की कमाई।

अपनों से अपनी बात

बुरा वक्त, मित्रता की कसौटी

सच्चा मित्र वही है, जो कठिन से कठिन परिस्थिति में भी न केवल साथ खड़ा रहे। बल्कि खतरों से खेलने पर अमादा होकर मित्र को बचाने के लिए तत्पर रहे।

एक राजा की उसी राज्य के एक सज्जन व्यक्ति से मित्रता थी। दोनों एक दिन टहलते हुए जंगल की तरफ निकल गये। राजा ने एक फल तोड़ उसके छह टुकड़े किये। एक टुकड़ा अपने मित्र को दिया। मित्र ने उसे खाकर और मांगा। राजा ने दे दिया। जब तीसरा मांगा तो राजा ने थोड़ा सकुचाते हुए वह भी दे दिया। मित्र ने जब शेष टुकड़े भी मांगे तो राजा ने मन मारकर उसे दो और टुकड़े दे दिये। मित्र वे टुकड़े भी बड़े चाव से खा गया और छठे की मांग कर दी।

इस पर राजा मन ही मन क्रुद्ध हो गया कि कैसा मित्र है, पूरा फल स्वयं खाना चाहता है। तब राजा ने कहा

–यह टुकड़ा तो मैं ही खाऊँगा, तुम्हें नहीं दूँगा।

ऐसा कहने के उपरांत राजा ने वह टुकड़ा मुँह में डाला और चबाते ही झट से थूंक दिया, क्योंकि वह बहुत ही कड़वा था। राजा ने कहा–हे मित्र! तुमने कड़वे फल के पाँच टुकड़े बिना शिकायत ही खा लिये। मैं तो मन में यह सोच रहा था कि फल बहुत मीठा होगा और तुम पूरा फल खाना चाह रहे हो परंतु जब मैंने खाया तब पता चला कि तुम मुझे कड़वा फल नहीं खाने देना चाहते थे। फल के इस कड़वे स्वाद के कारण तुमने यह सब किया। तुमने यह क्यों नहीं बताया कि यह फल इतना कड़वा है?

इस पर मित्र ने उत्तर दिया–राजन, आपने मुझे कई बार मीठे फल खिलाए। एक बार अगर कड़वा फल आ गया तो मैं कड़वा कहूँगा क्या? आपने मुझ पर अनगिनत उपकार किये हैं, अगर एक बार कष्ट आ गया तो मैं क्या वह कष्ट आपको बताऊँगा? राजा मित्र की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हो गया और उसे गले लगा लिया। एक मित्र को दूसरे मित्र के सुख–दुःख में बराबर का भागीदार होना चाहिए। मित्रता भेदभाव नहीं देखती है। सच्चा मित्र वही है, जो कठिन से कठिन हालत में भी साथ खड़ा रहे।

– कैलाश 'मानव'

खुशियाँ बाँटिए

दो मित्र एक महाविद्यालय में एक ही कक्षा में पढ़ते थे। एक मित्र बहुत अमीर और दूसरा बहुत गरीब था। अमीर मित्र का जब जन्मदिन आया तो उसे उसके परिवार के सदस्यों एवं परिजनों ने नाना प्रकार के बहुमूल्य उपहार दिए।

उसके बड़े भाई साहब ने उसे एक महँगी घड़ी भेंट की। उस घड़ी को पहनकर जब अमीर मित्र महाविद्यालय गया तो उसकी घड़ी गरीब मित्र को पसन्द आ गई।

उसने अमीर मित्र से एक दिन पहनने के लिए वह घड़ी माँगी। अमीर मित्र ने वह घड़ी सहर्ष गरीब मित्र को दे दी। एक दिन पश्चात् उसने घड़ी लौटाते हुए अमीर मित्र से पूछा, "तुमने मेहनत करके पैसे कमाए होंगे और फिर घड़ी खरीदी होगी।"

अमीर मित्र ने उत्तर दिया, "नहीं, यह मुझे मेरे बड़े भाई साहब ने उपहार में दी है। परंतु तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो?" शायद तुम यह सोच रहे हो कि तुम भी मेरी जगह होते और तुम्हें भी तुम्हारा बड़ा भाई ऐसी ही महँगी सुंदर घड़ी उपहार में देता।"

यह बात सुनकर गरीब मित्र ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं तुम्हारे जैसा बनने के बारे में नहीं सोच रहा था ताकि मैं दूसरों को उपहार दे सकता और उन्हें खुश रख पाता।" कहने का तात्पर्य यह है कि हमें जीवन में खुशियाँ बाँटते हुए आगे बढ़ना चाहिए। जब हम औरों को खुशियाँ बाँटते हैं, तब हम स्वयं भी खुश रहते हैं। खुशियाँ पाना है, तो खुशियाँ बाँटते चलो।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

कैलाश बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सीख किसे दी और लग किसे गई। कई लोग अपने काम से काम रखते हैं और दूसरों के मामलों में नहीं पड़ते। कैलाश की ऐसी आदत नहीं थी। उसे कुछ भी महसूस होता था तो अपनी बात प्रकट कर देता था, इसी का लाभ यह हुआ कि ओवरसियर ने बीड़ी छोड़ी या न छोड़ी अर्दली ने छोड़ना जरूर शुरू कर दिया। इस घटना से कैलाश का स्वयं की विचारधारा व कार्यों पर विश्वास बढ़ गया। किसी भी प्रकार के संकल्प की पूर्ति में आत्मविश्वास होना पहली आवश्यकता है।

चुरू का इलाका रेगिस्तान से भरा पड़ा था। आवागमन के समुचित साधन नहीं थे, जिले के कई गावों में जाने के लिए ऊँट ही एकमात्र साधन था। इस वजह से पूर्व के इन्सपेक्टर कहीं जाते भी नहीं थे। मेल ओवरसियरों से बस्ता मंगवा लेते थे और अपने घर पर बैठे बैठे ही निरीक्षण की औपचारिकताएं पूरी कर लेते थे। कैलाश को भी जब यही रास्ता सुझाया गया तो वह तैयार नहीं हुआ। उसे इधर–उधर जाने, लोगों से मिलने, नये नये अनुभव लेने में बहुत मजा आता था। ऊंट से कहीं जाने का प्रस्ताव आता तो वह रोमांचित हो जाता और खुशी– खुशी ऊंट की सवारी करता। मुसीबत अर्दली और मेल ओवरसियरों की होती जिन्हें कैलाश के साथ–साथ इन यात्राओं में शामिल होना पड़ता।

अंश - 79

कोरोना से बेहाल, भूख से परेशान

मेरा नाम प्रेम है। मैं किराणे की दुकान पर 8000 रुपये की नौकरी करता हूँ। घर में 2 बच्चे और पत्नी है। कुछ दिन पहले मुझे बुखार आया।

दूसरे दिन बच्चे को सर्दी–जुकाम हुआ और तीसरे दिन पत्नी को बुखार आ गया। खाने का स्वाद भी जाता रहा। हम सब घर वाले टेस्ट करवाने गए। दूसरे दिन हम सब की कोरोना रिपोर्ट पॉजिटीव आ गई। हम सभी घर में होम आइसोलेट हो गए। हॉस्पिटल से दवाई आ गई।

घर आई भोजन थाली–

अब हमारे सामने समस्या यह थी कि खाना कौन बनाए? तभी पता चला कि पडोस में नारायण सेवा की गाड़ी रोज फ्री खाना दे जाती है। हमने भी संस्थान से 4 थाली भोजन का आग्रह किया। अच्छी सी पैकिंग में स्वादिष्ट भोजन हमारे घर भी शुरु हो गया। 14 दिन तक रोज भोजन आया हमारे घर। दवाई और भोजन की बदौलत हम सभी परिजन ठीक है। मैं संस्थान का जितना साधुवाद करूं उतना कम है।

संक्रामक नहीं, लाइफस्टाइल रोगों के मामले दिखते हैं ज्यादा

रोग का पता लगाने में जांच है आधार

पिछले 20–25 साल की बात करें तो रोग स्वतः सही हो जाता था, पता नही चलता था। उस समय कम लोगों को ही इनकी पहचान के लिए विभिन्न जांचों की समझ थी। जांच का मतलब उनके लिए किसी बड़े रोग का पता लगाना था।

आर्थिक रूप से भी व्यक्ति डॉक्टर के पास नहीं जा पाता था। लेकिन अब व्यक्ति हर छोटी बीमारी के लिए भी जांच कराता है। हालांकि यह सही भी है ताकि समय रहते रोग का पता चल सके। इसके विपरीत ये जांचें व्यक्ति को मानसिक रूप से तनाव से भी ग्रस्त करती है।

चीनी व नमक ने बना दिया है रोगी

आजकल लोग डिब्बाबंद, कोल्ड ड्रिंक, फास्ट फूड चीजें पसंद करते हैं। पहले की तुलना में ये तुरंत व बनी बनाई मिल जाती है। इनमें मौजूद चीनी–नमक की मात्रा शरीर को कमजोर करती है।

चिकनपॉक्स, खसरा, डिप्थीरिया जैसे संक्रामक रोगों की संख्या घटी है, लेकिन तनाव, मोटापा, कैंसर, बीपी, डायबिटीज जैसी लाइफस्टाइल डिजीज बढ़ गई हैं। आमतौर पर बुजुर्गो को आने वाले हृदयघात अब युवाओं में दिख रहे हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

संतुष्टि के भाव

11 वर्ष का शुभम्, गांव चिराउबेड़ा, जिला–सहारनपुर, उत्तरप्रदेश श्री शिवकुमार का पुत्र है। शुभम् जब 10 माह का था तभी बुखार में पोलियो हो गया। कई शहरों में दिखाया, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। एक रिश्तेदार ने –जो अपने बेटे का इलाज संस्थान में करवा चुके थे, उन्हें संस्थान के बारे में बताया। इस तरह संस्थान में पहुंचे। पांव की जांच के बाद शुभम् के पैर के तीन ऑपरेशन हुए। शुभम् शीघ्र अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा – श्री शिवकुमार इस सम्भावना से पूरी तरह सन्तुष्ट है।

अनुभव अमृतम्

मैं देह देवालय को देखना चाहता हूँ। भगवान ने कैसे दिया? उनको पूर्ण बेहोश करने का इन्जेक्शन दिया– रीढ़ की हड्डी में। एक चीरा लगाया, चीरे के छेद से आँतें निकाली। पेट पर आँतें आ गई। ये चिकनी आँतें, ये फेफड़े की आँतें एक सिरा आँत का अन्दर रहा। दूसरा सिरा बीच का निकाल लिया। पेट पर कभी इधर फिसले, कभी उधर फिसले। दो अस्सिटेंट डॉक्टर ने कोहनी से रोका। देखा डॉक्टर साहब ने– कैलाशजी चक्कर तो नहीं आ रहे है? जी नहीं, डॉक्टर साहब, मैं एकटक देख रहा हूँ। टक–टकी लगाकर देख रहा हूँ। मैं देखता रहा। डॉक्टर साहब ने सिला लाल–लाल आँतें उस समय भी उनमें स्पंदन हो रहा था। दोनों सिरे अन्दर से जुड़े हुए थे– पेट से। पहली बार देखा आँतें बाहर पेट पर बहुत सारा भाग बीच का। टांके लगाये। यहाँ तीन–चार बार बेल ने सींग से मारा, चार–पांच जगह से टूट गई आँतें। टांका लगाया डेढ़ घण्टे का ऑपरेशन वापस आंतें रखी, फिर पेट को सिला। वाह! अद्भुत, हे! ठाकुर तुमने कैसा देह देवालय दे दिया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 206 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023